दूरभाषः 23468300
फैक्सः 23702440
directoriipa9@gmail.com

भारतीय लोक प्रशासन संस्थान
इंद्रप्रस्थ एस्टेट, रिंग रोड,
नई दिल्ली

वार्षिक निबंध पुरस्कार प्रतियोगिता–2019

वार्षिक निबंध पुरस्कार प्रतियोगिता–2019 के लिए प्रविष्टियॉ आमंत्रित हैं। प्रतियोगिता के अंतर्गत पुरस्कार राशि निम्नवत् हैः

प्रथम पुरस्कारः 10,000/– रुपये

द्वितीय पुरस्कारः 7,000/– रुपये

तृतीय पुरस्कारः 5,000/– रुपये

जिस प्रतियोगी को इस प्रतियोगिता में एक बार पुरस्कार प्राप्त हो चुका है, वह प्रतियोगी दुबारा उसी श्रेणी या उससे निम्न श्रेणी के किसी पुरस्कार का हकदार नहीं होगा। निबंधों के संयुक्त लेखन की अनुमति नहीं दी जाएगी तथा संयुक्त रूप से लेखकों द्वारा लिखित किसी भी निबंध पर प्रतियोगिता के अंतर्गत विचार नहीं किया जाएगा।

प्रतियोगिता के विषय हैं–

i. जल प्रबंधन

ii. आंतरिक सुरक्षाः मुद्दे, चुनौतियॉ तथा सुधार

iii. एक राष्ट्र एक चुनाव

iv. गॉधीजी आज के युग में

निबंध लेखकों से अपनी प्रविष्टियों में निम्नलिखित पहलुओं को शामिल करना अपेक्षित हैः

विषय (1) : जल प्रबंधन

शामिल किए जाने वाले मुख्य क्षेत्र

- जल का महत्व
- जल संसाधन
- राष्ट्रीय जल नीति
- जल संरक्षण तथा प्रबंधन पर बल देने वाली सरकार की वर्तमान नीतियॉ
- जलवायु परिवर्तन का जल पर प्रभाव
- कृषि के लिए जल की आवश्यकता

- जल संरक्षण
- जल संसाधनों का भविष्य
- जल संसाधनों का प्रबंधन
- चुनौतियों का मुकाबला कैसे करें

विषय (2) : आंतरिक सुरक्षाः मुद्दे, चुनौतियॉ तथा सुधार

'यदि आदमी देवदूत होते, तो किसी सरकार की आवश्यकता नहीं होती' – जेम्स मेडीसन

आंतरिक सुरक्षा, किसी राष्ट्र की सीमाओं के भीतर राष्ट्रीय कानून तथा व्यवस्था कायम रखते हुए इसके लोगों को आंतरिक सुरक्षा के खतरों से सुरक्षित करके शांति स्थापित तथा सुनिश्चित करने का एक कार्य है। हाल ही में, अधिकॉश राष्ट्र, चाहे वे विकसित हैं अथवा विकासशील, अमीर हैं अथवा गरीब, आंतरिक सुरक्षा से संबंधित मुद्दों का सामना कर रहे हैं, यद्यपि उसकी डिग्री अलग–अलग है। चरित्र का विकास आसानी से नहीं किया जा सकता। केवल परीक्षण तथा कठिनाइयों के अनुभव के माध्यम से ही राष्ट्र को सुदृढ़ किया जा सकता है तथा सफलता प्राप्त की जा सकती है।

आज 2019 में आंतरिक सुरक्षा के खतरों की तीव्रता, आवृत्ति तथा प्रकार आज से सत्तर वर्ष पूर्व के खतरों से पर्याप्त अलग है। एक स्तर पर, मानवजाति ने अपने अतीत से बहुत कुछ सीखा है तथा उसी के अनुसार भविष्य को संवारना चाहता है। दूसरी तरफ, तकनीकी विशेषज्ञता में असाधारण विकास के चलते अतीत भावी खतरों का सूचक नहीं है। आंतरिक सुरक्षा का अभाव विकास को अवरुद्ध कर अर्थव्यवस्था को धीरे–धीरे जाम कर देगा।

इसके अतिरिक्त **आंतरिक सुरक्षा विरोधी लोगों द्वारा युवाओं को मानसिक रूप से भटकाए जाने और उन्हें सही रास्ते पर लाने तथा समाज की मुख्य धारा से पहले ही दूर जा चुके इन बहुमूल्य मानव संसाधनों को वापिस कैसे लाया जाए, से** संबंधित मुद्दे हैं। इसके लिए **समाज की भागीदारी** की आवश्यकता है, जिसे राष्ट्र को स्वस्थ बनाने में एक बड़ी भूमिका निभानी है।

इस सुस्पष्ट तथ्य से कोई भी इनकार नहीं कर सकता कि पथभ्रष्ट युवा , जो आंतरिक सुरक्षा के लिए खतरा बन चुके हैं, वे वस्तुतः बहुमूल्य राष्ट्रीय मानव संसाधन हैं। कानून द्वारा उपलब्ध कराए गए उपायों तथा उपचारों के बावजूद, **सामाजिक उपचार इस नुकसान को कम करने का एक प्रभावी मार्ग** हो सकता है। आंतरिक सुरक्षा के खतरों से उत्पन्न चुनौतियों को पहले से नियंत्रित कर रहे बलों के साथ ही, समाज को भी बड़े स्तर पर ठोस भूमिका निभानी होगी। समाज की सक्रिय तथा उपयुक्त भागीदारी के बिना आंतरिक सुरक्षा से संबंधित समस्याओं को सुलझाना एक काल्पनिक विचार होगा।

निबंध लेखकों से अपेक्षित है कि वे आंतरिक सुरक्षा के खतरों के उद्भव तथा समय के साथ–साथ इन खतरों में वृद्धि को पहचानें, इन खतरों के कारणों का विश्लेषणात्मक विवेचन तथा इसकी चुनौतियों का चित्रण करें तथा सुधारों का रोडमैप दें ताकि राष्ट्रहित पर पड़ने वाले इसके कुप्रभावों को कम किया जा सके। निबंध लेखकों के लिए अनिवार्य है कि वे **डिजिटल क्रांति, साइबर सुरक्षा आदि जैसी बदलती परिस्थितियों में संभावित नए खतरों का स्पष्ट आकलन करें।** मौलिक विचारों को प्रकाशित करने वाले, एक

विचार को तर्कसम्मत तरीके से अगले विचार के साथ जोड़ने वाले तथा मुद्दों, चुनौतियों तथा सुधारों को यथोचित अल्प शब्दों में किंतु स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करने वाले को उचित श्रेय दिया जाएगा।

विषय (3) : एक राष्ट्र एक चुनाव

नियमित अंतराल पर होने वाले चुनाव लोकतंत्र की रीड़ की हड्डी हैं। स्वतंत्रता से लेकर ही, देश यह सुनिश्चित करने के लिए प्रयत्नशील रहा है कि देश का लोकतांत्रिक ढॉचा भंग न हो। भारत का निर्वाचन आयोग संसद तथा राज्य विधानसभाओं के लिए चुनाव संचालित करता है, किंतु इसके लिए जनशक्ति सरकारी तंत्र से ली जाती है।

तथापि इसमें अनेक चुनौतियॉ हैं। देश तथा जनसंख्या दोंनों के बढ़ते हुए आकार के कारण इसमें जटिलताऍ इतनी बढ़ गई हैं कि अधिकॉश मामलों में अब चुनाव अनेक चरणो में तथा नियमित अंतराल पर करवाए जाते हैं। चुनावों की आवृत्ति इतनी अधिक है कि प्रति वर्ष एक अथवा अन्य राज्यों में 2–5 तक चुनाव करवाए जाते हैं, इसका अभिप्राय है कि किसी भी दिए गए वर्ष में पर्याप्त समय तक आदर्श आचार संहिता लागू रहती है। यह कहना गलत नहीं होगा कि देश सदा ही 'चुनाव मोड' में रहता है।

देश के सदा ही 'चुनाव मोड' में रहने के कारण आदर्श आचार संहिता लागू रहने से नीतिगत निर्णय नहीं लिए जा सकते, इस समस्या के समाधान के लिए भारतीय जनता पार्टी ने तथा वर्तमान प्रधानमंत्री ने विचारार्थ एक विचार रखा है कि राष्ट्रीय तथा राज्य स्तर के चुनाव एक–साथ करवाए जाऍ।

निबंध लेखक इस की व्यवहार्यता पर विचार कर सकते हैं। इसके पक्ष तथा विपक्ष दोनों पर तर्क दिए जाऍं। निबंध लेखक विश्लेषण कर सकते हैं कि क्या एक –साथ चुनाव करवाना देश की लोकतांत्रिक अपेक्षाओं के परस्पर–विरोधी होगा अथवा नहीं तथा क्या यह कानूनी रूप से मान्य होगा अथवा इसके लिए संविधान में संशोधन की आवश्यकता होगी। अनेक राजनैतिक दलों ने एक –साथ चुनाव करवाने के संबंध में अपनी चिन्ता प्रकट की है। चुनावों के कारण अर्थव्यवस्था पर नीतिगत निर्णय न लिए जा सकने का प्रभाव, विश्लेषण का एक अच्छा क्षेत्र हो सकता है।

निबंध लेखक, ऊपर से लेकर निचले स्तर तक स्वतंत्र तथा निष्पक्ष चुनाव, जिसमें मतदाता बिना डर के भाग ले सकें, करवाने के लिए पर्याप्त प्रशासनिक व्यवस्थाओं का विश्लेषण कर सकते हैं। मतदान प्रक्रिया तथा मतगणना के लिए बड़ी मात्रा में जनशक्ति की आवश्यता होती है। केंद्रीय सशस्त्र पुलिस बल की तैनाती एक महत्वपूर्ण आयाम है, जिस पर विचार किया जा सकता है।

वित्तीय पहलू भी एक अन्य अत्यंत महत्वपूर्ण आयाम है। एक–साथ चुनाव करवाने से, भारतीय निर्वाचन आयोग तथा राजनीतिक दलों द्वारा किए जाने वाले खर्चों में पर्याप्त बचत होगी अथवा नहीं, के पहलू पर विचार किए जाने की आवश्यकता है। लागत व्यवहार्यता तथा लोकतांत्रिक अपेक्षाओं के बीच द्वंद्व विश्लेषण भी अत्यंत रुचिकर हो सकता है।

लेखक चुनावों से संबंधित ऑकड़े, यथा राजनीतिक दलों (राष्ट्रीय राजनीतिक दल, राज्य मान्यताप्राप्त दल तथा पंजीकृत गैर–मान्यताप्राप्त दल), मतदान करने वाली जनसंख्या तथा मतदान केंद्रों की बढ़ती हुई संख्या, चुनाव करवाने तथा सुरक्षा दोनों में– जनशक्ति तैनाती, भारतीय निर्वाचन आयोग तथा राजनीतिक दलों आदि की लागत आदि का प्रयोग कर सकते हैं।

(बी.देबरॉय तथा के.देसाई ने 2016 में नीति आयोग के लिए "एक–साथ चुनावों का विश्लेषणः क्या,क्यों और कैसे" विषय पर चर्चा पत्र तैयार किया।)

विषय (4) : गॉधीजी आज के युग में

महात्मा गॉधी 'आधुनिक भारतीय राष्ट्र के संस्थापक जनकों' में से एक के रूप में पहचाने जाते हैं। आप पूरे विश्व में एक नेता तथा भारत को शांति पूर्ण तरीके से ब्रिटिश सम्राज्य से स्वतंत्रता दिलवाने वाले के रूप में पहचाने जाते हैं। अहिंसक प्रदर्शन, सौहार्दतापूर्ण तरीके से रहना तथा युद्ध रहित विश्व– ये आपकी संकल्पनाओं में शामिल थे। उनके विचार तथा उद्धरण आज भी उपयुक्त हैं तथा हमें स्वयं को समझने में सहायता करते हैं एवं अपेक्षाकृत सुरक्षित तथा शांत विश्व के प्रति हमारा मार्गदर्शन करते हैं। गॉधीजी विश्व के प्रत्येक कोने में अपने अहिंसक तथा सर्वोच्च मानवतावादी व्यवहार के लिए याद किए जाते हैं। तिब्बती नेता दलाईलामा ने कहा "अनेक प्राचीन भारतीय मास्टरों ने अहिंसा का एक दर्शन के रूप में प्रचार किया है। वह केवल दार्शनिक समझ थी। किंतु इस बीसवीं शताब्दी में महात्मा गॉधी ने अत्यंत परिष्कृत मार्ग दिया तथा अहिंसा के अत्यंत महान दर्शन को आधुनिक राजनीति में कार्यान्वित किया एवं सफल हुए। यह बहुत बड़ी चीज़ है।" "आज विश्व शांति तथा विश्व युद्ध के बीच, बुद्धि तथा भौतिकवाद के बलों के बीच, लोकतंत्र तथा सर्वसत्तावाद के बीच बड़ी लड़ाई चल रही है।" इन बड़े युद्धों को लड़ने के लिए, आज के इस आधुनिक युग में गॉधीवाद की आवश्यकता है।

यदि हम गॉधीजी की सफलता के रहस्यों का विश्लेषण करें तो हम संभवतः– आस्था, कर्म तथा लोकवाद– उनके जीवन के इन तीन अत्यधिक महत्वपूर्ण पहलुओं को पाएँगे। आम जनसमूह के साथ अत्यधिक समन्वयन उनका एक अन्य रहस्य था। उन्होंने विश्व के अनेक राजनीतिक, सामाजिक तथा धार्मिक नेताओं को प्रेरित किया है तथा प्रेरित करते रहेंगे। गॉधीजी, समाज में अहिंसक मार्ग से अच्छाई के लिए लड़ाई लड़ने के लिए आधुनिक आदमी के लिए अनेक बहमूल्य कहावतें छोड़ गए हैं। गॉधीजी ने कहा कि 'अच्छाई' 'धीमी गति से चलती है'। गॉधीजी ने कहा कि 'अहिंसा धीमी गति से बढ़ने वाला पेड़ है। यह अतिसूक्ष्म किंतु निश्चित रूप से बढ़ता है।' आपने यह भी कहा कि 'मात्र अच्छाई अधिक काम नहीं आती'। आपने कहा 'अच्छाई के साथ ज्ञान, साहस तथा विश्वास होना चाहिए'। आज का इंसान गॉधीजी के बताए सात सामाजिक पापोंः सिद्धांत के बिना राजनीति, कार्य के बिना धन, नैतिकता के बिना व्यापार, चरित्र के बिना शिक्षा, विवेक के बिना सुख, मानवता के बिना विज्ञान तथा बलिदान के बिना पूजा –इन बातों से महान बुद्धिमत्ता ले सकता है।

उनकी शिक्षाएँ तथा परीक्षण पहले की अपेक्षा आज, विशेषतः जब हम विश्वव्यापी लोभ, भ्रष्टाचार, हिंसा तथा विश्व संसाधनों पर भारी बोझ डालने वाली उपभोगी जीवनशैली का समाधान खोजने की कोशिश कर रहे हैं, अधिक वैध हैं। सबसे पहले गॉधीजी ने भारत को सहनशक्ति, अहिंसा, सत्याग्रह, भारत छोड़ो आंदोलन, दांडी मार्च और स्वयं पर विश्वास करने का पाठ दिया। गॉधीजी ने न केवल भारत को स्वतंत्रता दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की, अपितु इसे अंतरराष्ट्रीय मंच पर एक परिपक्व राष्ट्र के रूप में उभारा।

आगे, यहॉ यह जोड़ना भी संगत होगा कि "स्वच्छता ही ईश्वरत्व है" राष्ट्रपिता महात्मा गॉधी का आदर्श वाक्य था। आपने आजीवन व्यक्तिगत तथा सामुदायिक स्वच्छता पर बल दिया तथा इसका प्रदर्शन और प्रचार किया। भारत को स्वच्छ बनाने के बारे में आपकी संकल्पना क्रांतिकारी थी। क्रांतिकारी इसलिए क्योंकि आप संभवतः अपने समय के एकमात्र नेता थे जिन्होंने समझा कि भारत की मात्र स्वतंत्रता ही नहीं

अपितु भारत का उद्धार स्वच्छता के माध्यम से संभव था। गॉधीजी ने कहा "स्वराज हमारी गलियों से आरंभ होना चाहिए"। स्वच्छता तथा अस्पृश्यता के मुद्दों को जोड़ते हुए, गॉधीजी ने इस तथ्य पर बल दिया कि सफाई करने वालों को निम्नतम सामाजिक स्थिति का मानना अत्यधिक अन्यायपूर्ण है। महात्मा गॉधी को स्वच्छ भारत का आइकन चुनते हुए भारत ने राष्ट्रपिता में अपनी पूर्ण आस्था पुनर्स्थापित की है।

गॉधीजी ने, बेरोज़ारी कम करने, सामाजिक समूहों तथा व्यक्तियों के बीच टकराव कम करने जैसे विविध पहलुओं पर कार्य किया। इनका समुदाय तथा व्यक्तिगत स्तर पर मानसिक स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव है। नई सहस्राब्दि में समावेशी विकास के उद्देश्य की प्राप्ति तथा संपन्न और वंचितों के बीच के बड़े अंतर को कम करने में भारत के सामने अनेक चुनौतियॉ हैं। बापूजी का समाज का पैराडिग्म पारस्परिक निर्भरता, संपूरकता, भाईचारा, आम सहमति तथा भागीदारी प्रबंधन द्वारा शासित है। समावेशी विकास ही सतत विकास की ओर ले जाएगा। इस संदर्भ में गॉधीजी की अंत्योदय के माध्यम से सर्वोदय नामक विकास की संकल्पना अर्थात् समाज के सबसे कमज़ोर के माध्यम से सबका कल्याण अत्यंत मूल्यवान है।

अतः निबंध में निम्नलिखित पर फोकस कर प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास किया जाना चाहिएः–

- इस भौतिकवादी, संशयवादी तथा उपभोगवादी संस्कृति में गॉधीजी की क्या उपयुक्तता होनी चाहिए ?
- आधुनिक युग में गॉधीजी का क्या महत्व है तथा उनकी सफलता का क्या रहस्य है ?
- महात्मा गॉधी द्वारा अनुसरण किए गए 6 सिद्धांतोंः सत्य, अहिंसा, शाकाहारिता, ब्रह्मचर्य, सादगी तथा आस्था से शिक्षा लेते हुए, भविष्य के लिए क्या सीख है?
- क्या वस्तुतः हमारे लिए उनका अब कुछ और महत्व है? क्या गॉधीजी के विचार बीते समय के लिए थे अथवा क्या आज भी हमें उनके कदमों का अनुसरण करने का प्रयत्न करना चाहिए?
- नई सहस्राब्दि में समावेशी तथा सतत विकास के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए ग्रामीण स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से गॉधीवादी आर्थिक मॉडल के अनुप्रयोग पर फोकस
- "स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत"। स्वच्छता मात्र सरकार का नहीं अपितु सरकार के लिए काम करने वाले नागरिकों सहित सभी नागरिकों का है। किंतु गॉधीजी का स्वच्छ भारत का स्वप्न क्या था?
- महात्मा गॉधी का जीवन हमारे लिए एक उदाहरण है। "मेरा जीवन मेरा संदेश है"। उनके जीवन के कार्य दर्शाते हैं कि शांति तथा ऐसे परिवेश में जीना संभव है जिसमें मामले लड़ाई झगड़े तथा हिंसा से नहीं सुलझाए जाते, है। अतः उनके विचार इस शताब्दी में भी क्यों उपयुक्त नहीं होने चाहिए?
- क्या हम अपनी सुरक्षा के लिए हिंसा के नए औज़ारों को बनाने के अपने प्रयत्नों से अत्यधिक बंधे हुए हैं?क्या यह सुनिश्चित करने कि अन्य लोग भी हमारे साथ सहयोग कर रहे हैं की अपेक्षा क्या हम अपने आप को सुरक्षित कैसे रखना है, के बारे में अत्यधिक चिंतित नहीं हैं?
- यदि गॉधीजी ने अपने विचारों तथा विश्व के लिए संकल्पनाओं के लिए अपनी जान दी, तो क्या हमें पुनर्विचार नहीं करना चाहिए कि वस्तुतः आज हमारे लिए उनका क्या अर्थ है, तथा अपने प्रतिदिन के जीवन में उनको कैसे लागू किया जा सकता है? तो क्या उनके विचार 21वीं शताब्दी में उपयुक्त हैं?
- गॉधीवादी मूल्य– क्या आज वे पूर्णतया संगत हैं तथा क्या ये भविष्य में भी ऐसे ही रहेंगे?
- नैतिक मूल्यों को कौन पुनःस्मरण करवाएगा, तथा कौन गॉधीजी के समान लोगों में, स्वतंत्र समाज के प्रत्येक नागरिक के उत्तरदायित्वों की भावना भरेगा?
- महात्मा गॉधी के जन्म की 150वीं वर्षगॉठ के आयोजन पर हम क्या करने का संकल्प लेते हैं?

निबंध के सामान्य दिशानिर्देश

निबंध हिंदी अथवा अंग्रेजी भाषा में होना चाहिए। निबंध लगभग 5000 शब्दों का होना चाहिए। प्रतियोगी को निबंध में प्रयुक्त शब्दों की कुल संख्या बतानी होगी अन्यथा निबंध स्वीकार नहीं किया जाएगा। 5500 से अधिक शब्दों वाला निबंध स्वीकार नहीं किया जाएगा। निबंध पृष्ठ के केवल एक ही तरफ दोहरे स्थान के साथ टाईप किया हुआ होना चाहिए। जिन प्रविष्टियों में इस निर्धारित मानदंड का अनुपालन नहीं किया जायेगा, उन्हें अस्वीकृत माना जाएगा।

कल्पित नाम के साथ निबंध की तीन प्रतियां जमा की जानी चाहिए। प्रतियोगी का पूरा असली नाम तथा पता एक अलग कागज़ पर दिया जाना चाहिए और यह कागज़ एक सीलबंद लिफाफे में रखा होना चाहिए जिस पर ऊपर कल्पित नाम के साथ ही निम्न शब्द अंकित होने चाहिए।

वार्षिक निबंध पुरस्कार प्रतियोगिता–2019
भारतीय लोक प्रशासन संस्थान
नई दिल्ली।

सभी निबंध पंजीकृत डाक द्वारा निदेशक, भारतीय लोक प्रशासन संस्थान, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, रिंग रोड, नई दिल्ली–110002 को भेजे जाने चाहिए। ये निबंध 31 अगस्त, 2019 तक अवश्य प्राप्त हो जाने चाहिए। लिफाफे के ऊपर "वार्षिक निबंध पुरस्कार प्रतियोगिता–2019" लिखा होना चाहिए। निर्धारित तिथि के बाद प्राप्त प्रविष्टियों पर विचार नहीं किया जायेगा।

निर्णायक गण इन निबंधों पर अपना निर्णय देंगे और इनका निर्णय अंतिम माना जाएगा। यदि प्राप्त निबंधों में से कोई भी निबंध आवश्यक मानक स्तर तक नहीं पहुंचता है तो संस्थान को यह अधिकार है कि वह किसी को भी पुरस्कार न दे। पुरस्कृत निबंध भारतीय लोक प्रशासन संस्थान तथा लेखक की संयुक्त बौद्धिक संपत्ति होंगे।
कृपया ध्यान दें: अन्य किसी भी प्रकार के स्पष्टीकरण के इच्छुक प्रतियोगी निदेशक, भारतीय लोक प्रशासन संस्थान, इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, रिंग रोड, नई दिल्ली–110002 को लिख सकते हैं।